**ओ३म्**

**‘क्या देश ने महर्षि दयानन्द को उनके योगदान के अनुरूप स्थान दिया?’**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

महर्षि दयानन्द (1825-1883) ने भारत से अज्ञान, अन्धविश्वास आदि दूर कर इनसे पूर्णतया रहित सत्य सनातन वैदिक धर्म की पुनस्र्थापना की थी और इसे मूर्तरूप देने के लिए आर्यसमाज स्थापित किया था। वैदिक धर्म की यह पुनस्र्थापना इस प्रकार से है कि सत्य, सनातन, ज्ञान व विज्ञान सम्मत वैदिक धर्म महाभारत काल के बाद विलुप्त होकर उसके स्थान पर नाना प्रकार के अन्धविश्वास, कुरीतियां, सामाजिक असमानतायें व पाखण्डों से युक्त पौराणिक मत ही प्रायः देश में प्रचलित था जिससे देश का प्रत्येक नागरिक दुःख पा रहा था। अज्ञान व अन्धविश्वास ऐसी चीजें हैं कि यदि परिवार में एक दो सदस्य भी इनके अनुगामी हों, तो पूरा परिवार अशान्ति व तनाव का अनुभव करता है। देश की जब बहुत बड़ी जनता अन्धविश्वासों में जकड़ी हुई हो, तो फिर सारे देश पर उसका दुष्प्रभाव पड़ता ही है और ऐसा ही महर्षि दयानन्द जी के समय में हो रहा था। उनके आगमन से पूर्व वैदिक धर्म के अज्ञान व अन्धविश्वास के कारण तथा विश्व में सत्य धर्म का प्रचार न होने के कारण अविद्यायुक्त मत उत्पन्न हो गये थे जो हमारे सनातन वैदिक धर्म की तुलना में सत्यासत्य की दृष्टि से निम्नतर थे। महर्षि दयानन्द ने सत्य धर्म का अनुसंधान किया और वह इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि सृष्टि की आदि में ईश्वर से ऋषियों को प्राप्त ज्ञान **‘‘चार वेद”** ही वास्तविक धर्म की शिक्षायें हैं जिनका संसार के प्रत्येक व्यक्ति को आचरण करना चाहिये तभी **‘वसुधैव कुटुम्बकम्’** का स्वप्न साकार होने के साथ विश्व में सुख व शान्ति स्थापित हो सकती है। स्वामी दयानन्द जी को सद्ज्ञान प्रदान कराने वाले गुरू प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द सरस्वती, मथुरा थे। उन्होंने गुरू दक्षिणा में उनसे देश से अज्ञान व अन्धविश्वास मिटाकर देश में वैदिक सूर्य को पूरी शक्ति के साथ प्रकाशित करने का दायित्व सौंपा था जिसे अपूर्व शिष्य महर्षि दयानन्द ने स्वीकार किया और उसका प्राणपण से पालन किया। **इतिहास में स्वामी विरजानन्द सरस्वती जैसे गुरू और स्वामी दयानन्द सरस्वती जैसे शिष्य देखने को नहीं मिलते। ऐसा भी कोई महापुरूष इस देश व विश्व में नहीं हुआ जिसे इतनी अधिक समस्याओं के साथ एक साथ जूझना पड़ा हो जितना की स्वामी दयानन्द जी को जूझना पड़ा।**

**मनमोहन कुमार आर्य**

स्वामी दयानन्द के समय देश धार्मिक व सामाजिक अन्धविश्वासों से गम्भीर रूप से ग्रसित था। राजनैतिक दृष्टि से भी यह स्वतन्त्र न होकर पहले मुगलों तथा बाद में अंग्रेजों का गुलाम बना। यह परतन्त्रता ईसा की आठवीं शताब्दी से आरम्भ हुई थी। सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर से चार ऋषियों को आध्यात्मिक व भौतिक अर्थात् परा व अपरा विद्याओं का ज्ञान **‘‘वेद’’** प्राप्त हुआ था। सृष्टि के आरम्भ से बाद के समय में उत्पन्न सभी ऋषियों व राजाओं ने इसी वैदिक धर्म का प्रचार कर सारे संसार को अन्धविश्वासों से मुक्त किया हुआ था। लगभग पांच हजार वर्ष पूर्व महाभारत काल के बाद वेदों का प्रचार प्रसार बाधित हुआ जिसका परिणाम यह हुआ कि भारत में सर्वत्र अज्ञान व अन्धविश्वास फैल गया और इसका प्रभाव शेष विश्व पर भी समान रूप से हुआ। अज्ञानता व अन्धविश्वासों के परिणाम से देश में सर्वत्र मूर्तिपूजा, फलित ज्योतिष, अवतारवाद, मृतक श्राद्ध, बाल विवाह, पुनर्विवाह न होना, सतीप्रथा, विधवाओं की दयनीय दशा, जन्मना जातिवाद, स्त्रियों व शूद्रों को वेद आदि की शिक्षा का अनाधिकार आदि के उत्पन्न होने से देश व समाज का घोर पतन हुआ। यह समय ऐसा था कि लोग धर्म के सत्यस्वरूप को तो भूले ही थे, ईश्वर व आत्मा के स्वरूप सहित अपने कर्तव्यों को भी भूल गये थे। विधर्मी हमारे बन्धुओं का जोर-जबरस्ती, प्रलोभन व नाना प्रकार के छल द्वारा धर्मान्तरित करते थे। हिन्दू समाज के धर्म गुरूओं को इसकी किंचित भी चिन्ता नहीं थी। **ऐसे समय में महर्षि दयानन्द का आगमन हुआ जैसे कि रात्रि के बीतने के बाद सूर्योदय होता है।**

**महर्षि दयानन्द ने वेदों का उद्घोष कर कहा कि वेद ईश्वरीय ज्ञान व सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेदों में कोई बात अज्ञानयुक्त व असत्य नहीं है। वेद ज्ञान का उद्देश्य मनुष्यों को धर्म व अधर्म तथा सत्य व असत्य की शिक्षा देकर कर्तव्य व अकर्तव्य का बोध कराना है। वेद विहित कर्तव्य ही धर्म तथा वेद निषिद्ध कार्य ही अधर्म कहलाते हैं।** मूर्तिपूजा, फलित ज्योतिष, अवतारवाद, बाल विवाह, अनमेल विवाह को उन्होंने वेद विरूद्ध कार्य बताया। उन्होंने पूर्ण युवावस्था में समान गुण, कर्म व स्वभाव वाले युवक युवती के विवाह को वेद सम्मत बताया। वह सबको वेद आदि शास्त्रों सहित ज्ञान व विज्ञान से पूर्ण एक समान, अनिवार्य व निःशुल्क शिक्षा के पक्षधर थे। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र वर्णो को वह गुण, कर्म व स्वभावानुसार मानते थे तथा जन्मना जाति वा जन्मा मिथ्या वर्ण व्यवस्था के प्रथम व सबसे बड़े विरोधी थे। उन्होंने देश व जाति के पतन के कारणों पर विचार व अनुसंधान किया और इसकी जड़ में उन्होंने वेद विद्या का अनभ्यास, ब्रह्मचर्य का पालन न करना, मूर्तिपूजा, फलित ज्योतिष, बाल व अनमेल विवाह सहित बहु विवाह एवं व्यभिचार, जन्मना जाति व्यवस्था, सामाजिक असमानता आदि को कारण बताया। उन्होंने पूरे देश में एक जन आन्दोलन चलाया व अनेक कुप्रथाओं का उन्मूलन भी किया। वह आर्य भाषा हिन्दी के प्रबल समर्थक और गोहत्या सहित सभी पशुओं के प्रति हिंसा वा मांसाहार के प्रबल विरोधी थे। उन्होंने एक निराकार व सर्वव्यापक ईश्वर की उपासना का सन्देश दिया। वह त्रैतवाद के उद्घोषक थे व उन्होंने उसे तर्क, युक्ति व न्याय की कसौटी पर सत्य सिद्ध किया। ईश्वर की उपासना की सही विधि उन्होंने देश वा विश्व को दी। ईश्वर, जीव व प्रकृति के सत्य स्वरूप का भी उन्होंने अनुसंधान कर प्रचार किया। उन्होंने सभी धर्मों का अध्ययन कर पाया कि संसार के सभी मनुष्यों का एक ही धर्म है और वह है **‘सत्याचरण’**। सत्य वह है जो वेद प्रतिपादित कर्तव्य हैं। उन्होंने वायु शुद्धि, स्वास्थ्य रक्षा और प्राणि मात्र के सुख तथा परजन्म के सुधार के लिए अग्निहोत्र यज्ञों का भी प्रचलन किया।

विधवा विवाह का उनके विचारों से समर्थन होता है, जो कि उन दिनों एक प्रकार से आपद धर्म था। उनकी एक मुख्य देन धार्मिक जगत में मतभेद व भ्रान्ति होने पर उसके निदान हेतु शास्त्रार्थ की प्राचीन पद्धति को पुनर्जीवित करना था। सभी मतों के विद्वानों से उन्होंने अनेक विषयों पर शास्त्रार्थ किये और वैदिक मान्तयाओं की सत्यता को देश व संसार के समक्ष सिद्ध किया। उनकी एक अन्य सर्वाधिक महत्वपूर्ण देन शुद्धि की परम्परा को स्थापित करना था। उनके व उनके अनुयायियों के वेद प्रचार से अनेक स्वजाति व अन्य मतस्थ बन्धु प्रभावित हुए और उन्होंने प्रसन्नता पूर्वक वैदिक धर्म स्वीकार किया। आजकल इस परम्परा को हमारे अनेक पौराणिक बन्धु भी अपना रहे हैं जो कि उचित ही है। शुद्धि का अर्थ है श्रेष्ठ मत व धर्म को ग्रहण करना और निम्नतर व हेय को छोड़ना। हम स्वयं पौराणिक परिवार के थे और हमने आर्यसमाज द्वारा प्रचारित वैदिक धर्म को अपनाया है। शास्त्रार्थ व शुद्धि, यह दो कार्य, महर्षि दयानन्द के हिन्दू जाति के लिए वरदान स्वरूप कार्य हैं। उनकी एक प्रमुख देन **‘सत्यार्थ प्रकाश’** व इतर वैदिक साहित्य का प्रणयन है। **सत्यार्थ प्रकाश तो आज का सर्वोत्तम धर्म ग्रन्थ है। जो इसको जितना अपनायेगा, उसकी उतनी ही आध्यात्मिक व भौतिक उन्नति होगी।** महर्षि दयानन्द व उनके अनुयायियों के प्रयत्नों के बाद भी मूर्तिपूजा जारी है जिसका बुद्धि संगत समाधान व वेदों में विधान आज तक कोई मूर्तिपूजा का समर्थक दिखा नहीं सका। अतीत में इसी मूर्तिपूजा व इन्हीं अन्धविश्वासों के कारणों से हमारा सार्वत्रिक पतन हुआ था। **अन्य सभी अन्धविश्वास काफी कम हुए हैं जिससे देश में भौतिक व सामाजिक उन्नति हुई है। इस सब देश व समाज की उन्नति का श्रेय यदि सबसे अधिक किसी एक व्यक्ति को है तो वह हैं महर्षि दयानन्द सरस्वती। हम महर्षि दयानन्द की सभी सेवाओं के लिए उनको कृतज्ञता पूर्वक नमन करते हैं।** महर्षि दयानन्द ने वेदों के आधार पर जिन कार्यों को करणीय बताया और जिन अज्ञानपूर्ण कार्यों का विरोध किया, उसे संसार का सारा बुद्धिजीवी समाज स्वीकार कर चुका है जिससे दयानन्द जी के सभी कार्यों का महत्व निर्विवाद रूप से सिद्ध है।

एक काल्पनिक प्रश्न मन में यह भी उठता है कि यदि महर्षि दयानन्द भारत में न आते तो हमारे समाज व देश की क्या स्थिति होती। हमने जो अध्ययन किया है उसके आधार पर यदि महर्षि दयानन्द न आते तो हमारे समाज से अज्ञान, अन्धविश्वास, पाखण्ड, कुरीतियां, मिथ्याचार, व्यभिचार, जन्मना जातिवाद, सामाजिक असमानता कम होने के स्थान पर कहीं अधिक वृद्धि को प्राप्त होती। विधर्मी हमारे अधिकांश भाईयों को अपने अपने मत वा धर्म में परिवर्तित करने का प्रयास करते और उसमें वह सफल भी होते, ऐसा पुराने अनुभवों से अनुमान कर सकते हैं। हिन्दू समाज में उस समय धर्मान्तरण को रोकने वाला तो कोई नेता व विद्वान था ही नहीं। इससे देश का सामाजिक वातावरण भयंकर रूप से विकृत हो सकता था। देश में स्वाधीनता के प्रति वह जागृति उत्पन्न न होती जो आर्य समाज की देन है। आर्य समाज ने आजादी में जो सर्वाधिक योगदान दिया है उसके न होने से देश के आजाद होने में भी सन्देह था। कुल मिलाकर देश की वर्तमान में जो स्थिति है उससे कहीं अधिक खराब स्थिति देश व समाज की होती। यदि महर्षि न आते तो वेद तो पूर्णतया लुप्त ही हो गये होते। योग व आयुर्वेद भी विलुप्त हो जाते या मरणासन्न होते। सच्ची ईश्वरोपासना से सारा संसार वंचित रहता। लोगों को सत्य धर्म व मत-मजहब-सम्प्रदाय का अन्तर पता न चलता। कुल मिलाकर स्थिति आज की तुलना में भयावह होती, यह विश्वासपूर्वक कहा जा सकता है।

हमारे इस विवेचन से यह निष्कर्ष भी निकलता है कि महर्षि दयानन्द देश में सबसे अधिक मान-सम्मान व आदर पाने के अधिकारी हैं। इस पर भी देश के प्रभावशाली लोगों ने अपने-अपने मत, अपने अपने हितों के साधक व राजनैतिक समीकरण में फिट होने वाले इच्छित व्यक्तियों को गुण-दोष को भूलकर मुख्य माना। आर्य समाज जिसने देश को ज्ञान विज्ञान सम्मत बनाने, देश को आजादी का मन्त्र देने व अंग्रेजों से प्रताड़ना मिलने पर भी देश की स्वतन्त्रता के लिए तिल तिल कर जलने का कार्य किया व समाज से असमानता दूर करने का महनीय व महानतम कार्य किया, उसकी देश की आजादी के बाद घोर उपेक्षा की गई है। आज का समय सत्य व यथार्थवाद का न होकर समन्वयवाद व स्वार्थवाद का अधिक दिखायी देता है। सब अपने अपने विचारों व विचारधाराओं के लोगों को ही श्रेष्ठ व ज्येष्ठ मानते हैं जबकि सत्य दो नहीं केवल एक ही होता है। **हम निष्पक्ष भाव से विचार करने पर भी महर्षि दयानन्द को ही देश का महानतम महापुरूष पाते हैं।** स्वार्थ, अज्ञानता तथा अपने व पराये में पक्षपात करने का यह युग इस देश में कभी समाप्त होगा या नहीं, कहा नहीं जा सकता। **यह ईश्वर का संसार और ब्रह्माण्ड है।** महर्षि दयानन्द तो अपना बलिदान देकर अपना एक एक श्वास इस देश को अर्पित कर चले गये हैं। अब तक भी देश में सत्य आध्यात्मिक ज्ञान की प्रतिष्ठा न होकर हमारे हृदयों में सर्वव्यापक सच्चिदानन्द परमात्मा के स्थान पर पाषाण देवता ही विराजमान हैं। यह स्थिति भी अप्रिय है कि आज आर्य समाज संगठनात्मक दृष्टि से शिथिल पड़ गया है। यहां भी वेद विरोधी व ऋषि द्रोही स्वार्थी व्यक्तियों की कमी नहीं है जो येन केन प्रकारेण अपना प्रभुत्व कायम रखना चाहते हैं।

यदि हमारे सभी देशवासी महर्षि दयानन्द के दिखाये मार्ग को सर्वात्मा स्वीकार कर लेते और उस पर चलते तो आज हम संसार में आध्यात्मिक व भौतिक प्रगति में प्रथम स्थान पर होते। कोई देश हमें आंखे दिखाने की कुचेष्टा नहीं कर सकता था। परन्तु नियति ऐसी नहीं थी। आज भी देशवासी एक मत, एक भाव, एक भाषा, एक सुख दुख के मानने वाले नहीं है। यहां तक कि ईश्वर द्वारा सृष्टि के आरम्भ में दी गई संस्कृत भाषा व ईश्वरीय ज्ञान वेद भी देश व विश्व में राजनीति व हानि लाभ की दृष्टि से देखे जाते हैं। इसका खामियाजा देश को भुगतना पड़ रहा है। इससे समाज बलवान होने के स्थान पर कमजोर हुआ है। महर्षि दयानन्द देश को आदर्श देश व विश्व गुरू बनाना चाहते थे, उनका वह स्वप्न अधूरा है। अनुभव होता है कि इसमें अनेक शताब्दियां लग सकती है। यह सत्य है कि देश व विश्व को सुखी, सम्पन्न, समृद्ध, एक भाव व विश्व गुरू बनाने में जो मार्ग महर्षि दयानन्द ने बताया है, वही एक मात्र सही मार्ग है और उसी पर चल कर **‘‘वसुधैव कुटुम्बकम्’’** का लक्ष्य प्राप्त होगा। नान्यः पन्था विद्यते अयनाय।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**